उत्तर-पुस्तिका

Me 'n' Mine

हिंदी

(PULLOUT WORKSHEETS)

कक्षा VII के लिए

डॉ० भूपेंद्र सिंह
एम०ए०, एम०एड्० , पीएच०डी०
हिंदी विभागाध्यक्ष, अरावली इंटरनेशनल स्कूल
फरीदाबाद

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा०लि०
नई दिल्ली-110002 (इंडिया)

खंड-क (अपठित बोध)

अभ्यास-कार्यपत्रिका–1

1. 1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक 'व्यायाम के लाभ' हैं।
2. व्यायाम के कई प्रकार होते हैं–
(क) योगाभ्यास (ख) तैराकी (ग) दौड़
3. खेल में भाग लेने से शरीर फुर्तीला बनता है, मिल-जुलकर कार्य करने की भावना का विकास होता है।
4. विद्यालयों मे प्रायः फुटबॉल, कबड्डी, बास्केटबॉल, हॉकी, खो-खो आदि खेल खिलाए जाते हैं।
5. 'दौड़' व्यायाम से बालक-बालिकाओं के शरीर के निचले और मध्य भाग की मांसपेशियाँ मज़बूत होती है।

2. 1. दुनिया में हरियाली पेड़ फैलाते हैं।
2. पेड़ों पर सुंदर फूल खिलते हैं।
3. पेड़ों से वायु शुद्ध होती है।
4. प्रस्तुत पद्यांश में वृक्षों के महत्व के बारे में बताया गया है।
5. संसार शब्द के दो पर्यायवाची शब्द हैं– दुनिया, जग।

अभ्यास-कार्यपत्रिका–2

1. 1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–सादा जीवन, उच्च विचार।
2. मनुष्य को इस संसार के सभी प्राणियों और पदार्थों में श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि मनुष्य बड़ा बुद्धिमान और विचारवान प्राणी है।
3. मनुष्य के विचार सच्चे, व्यावहारिक जीवन से संबंध रखने वाले, सादे और पवित्र होने चाहिए।
4. सादे जीवन और उच्च विचारों को मानव जीवन की सफलता की सीढ़ी माना गया है।
5. **ऐतिहासिक**–इतिहास, **विकसित**–विकास।

2. 1. मनुष्य को संसार में मिलजुल कर रहना चाहिए।
2. आसमान को गहरे नीले तंबू (चँदोवा) के समान बताया गया है।
3. सभी एक-दूसरे के दुख को समझते हुए प्यार से रहें, यही सभी धर्मों का सार है।
4. प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवि संदेश देना चाहता है कि सभी एक-दूसरे को एक समान समझें और सभी एक-दूसरे के सुख-दुख में शामिल हों।
5. वितान–तंबू/चँदोवा, मूलमंत्र–मूलतत्व/कुंजी।

अभ्यास-कार्यपत्रिका–3

1. 1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–परिश्रम सफलता की कुंजी।
2. विद्यार्थियों के लिए परिश्रम का विशेष महत्व है।
3. विद्यार्थी काल को साधना काल कहा गया है।
4. विद्यार्थी काल मे विद्यार्थी का ध्यान शारीरिक-मानसिक विकास को समृद्ध करने की ओर रहता है।
5. उन्हें खाने-पीने, ओढ़ने-पहनने ओर पढ़ाई-लिखाई के खर्च की चिंता नहीं होती।

2. 1. इस पद में काँटे और फूल की बातें हो रही हैं।
2. काँटों का स्वभाव अच्छा नहीं है। वह अपने पास आने वालों को नुकसान ही पहुँचाता है। किसी की उंगलियाँ छेदता है तो किसी के सुंदर वस्त्र फाड़ देता है। तितलियों के पंखों को हानि पहुँचाता है तो भौंरे के काले शरीर को छेदता है।
3. फूल तितलियों, भौंरों को अपनी गोद में लेकर रस पिलाता है।
4. फूल अपनी खुशबू से सबको आनंदित कर देता है।
5. **वसन**–वस्त्र, **वेधना**–छेद कर देना।

अभ्यास-कार्यपत्रिका–4

1. 1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक–दहेज प्रथा: एक अभिशाप, दहेज प्रथा, दहेज प्रथा: एक सामाजिक बुराई।
2. प्राचीन काल में दहेज का रूप सात्विक था।
3. प्राचीन काल में वधूपक्ष स्वेच्छा से अन्न, फल, पशुधन आदि वरपक्ष को भेंट करता था।
4. आज-कल वर को क्रय-विक्रय की वस्तु समझा जाता है।
5. दहेज-प्रथा का मूल कारण पुरुष प्रधान व्यवस्था है।

2. 1. कर्मवीरों को पथ की सरलता अथवा कठिनता से कोई लेना-देना नहीं होता।
2. असंभव शब्द कायरों का है।
3. 'असंभव कायरों का शब्द है' नेपोलियन ने कहा।
4. व्यक्ति का जीवन स्वाभिमान, उत्साह और शक्ति के बिना व्यर्थ है।
5. असंभव, कायर शब्दों के विलोम शब्द संभव और निडर है।

अभ्यास-कार्यपत्रिका–5

1. 1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–परिवार नियोजन।
2. 'परिवार नियोजन' का आशय है: परिवार में संतानोत्पत्ति को नियंत्रित करना।
3. शहरी लोगों मे परिवार नियोजन के संबंध में जागरूकता आई है।
4. परिवार नियोजन कार्यक्रम को 1975 में पूरी दृढ़ता के साथ चलाया गया।
5. 1977 में परिवार नियोजन का नाम बदलकर 'परिवार कल्याण' कर दिया गया।

2. 1. इन पंक्तियों में बरसात के मौसम की चर्चा है।
2. बरसात ने पेड़-पौधों की प्यास बुझा दी।
3. बरसात के आगमन पर जीव-जंतु प्रसन्नता से झूम उठे।
4. अपनी पीड़ा भूलकर मोर, ठुमुक-ठुमुक कर नाचने लगा।
5. **अवसान**–समाप्ति, **प्रमुदित**–प्रसन्न।

अभ्यास-कार्यपत्रिका–6

1. 1. एक संन्यासी, सितंबर 1968 में चालीस गाँव आए थे।
2. संन्यासी शयोकर शास्त्री के घर गए।
3. संन्यासी ने शास्त्री जी से कहा कि वे पाटणे मंदिर में रहकर साधना करना चाहते हैं।
4. शास्त्री जी संन्यासी को धर्मप्रेमी सज्जन बद्री काका के पास ले गए।
5. शास्त्री और बद्री काका ने संन्यासी को हिंसक पशुओं का भय दिखाया।

2. 1. यहाँ कवि ने मेघों/बादलों के आने का वर्णन किया है।
2. कवि ने मेघों को एक शहरी मेहमान के रूप में चित्रित किया है।
3. पेड़ झुककर बादलों का रूप-सौंदर्य देखने लगे।
4. कवि ने नदी को एक ऐसी नायिका के रूप में चित्रित किया है, जो शहरी मेहमान को देखने आई है।
5. मेघ शब्द के पर्यायवाची शब्द–बादल, वारिद, जलद आदि हैं।

अभ्यास-कार्यपत्रिका–7

1. 1. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होने से युवकों के हृदय में अपने धर्म, संस्कृति और राष्ट्र के लिए प्रेम पैदा होता है।
2. हमारे राष्ट्र के लिए खेद का विषय शिक्षा का माध्यम पूर्ण रूप से मातृभाषा का न बनना है।

3. स्वाधीन राष्ट्र में शिक्षा के क्षेत्र में विदेशी भाषा का प्रभुत्व स्थापित है।
4. राष्ट्र के अध:पतन का चिह्न स्वार्थी नेताओं के हृदय में विदेशी भाषा के प्रति उत्पन्न मोह को कहेंगे।
5. स्थापित–इत, वास्तविक–इक।

2. 1. उपर्युक्त काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक–कर्मवीर।
2. काव्यांश में वीरों की विशेषताएँ–वीर संकटों से घबराते नहीं हैं। वे मुश्किल रास्तों पर चलते हुए भी मुस्काते रहते हैं। वे असंभव को भी संभव बनाने की क्षमता रखते हैं।
3. वीर व्यक्ति कठिन रास्तों और असंभव कार्यों के बीच सदा मुस्काते और गाते रहते हैं।
4. अभिमान, उत्साह और शक्ति के बिना जीवन व्यर्थ है।
5. 'असंभव' शब्द में 'अ' प्रत्यय है।

अभ्यास-कार्यपत्रिका–8

1. 1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्ष है–भारत का राष्ट्रीय पशु : बाघ
2. भारत का राष्ट्रीय पशु बाघ वनों में पाया जाता है।
3. बाघ की विशेषताएँ–देह पतली और हल्की, शरीर पर गहरी कत्थई रंग की धारियाँ, मुँह छोटा तथा चाल टेढ़ी होती है।
4. बाघ को भारत का राष्ट्रीय पशु उसकी स्फूर्ति, चतुराई, साहस और तीव्रता के कारण माना जाता है।
5. रात्रि-स्फूर्ति के विलोम शब्द दिवा-आलस्य है।

2. 1. उपर्युक्त काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक–पेड़।
2. पेड़ की बाँहें डालियों को कहा गया है।
3. दूषित हवा को खींचकर पेड़ विशुद्ध प्राण-वायु प्रदान करते हैं।
4. धरती को सींचने के लिए पेड़ बादलों का आह्वान करते हैं।
5. वर्षा होने पर खेत, उपवन, वन लहलहाते नज़र आते हैं।

अभ्यास-कार्यपत्रिका–9

1. 1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक–चाय संबंधी जानकारी।
2. विश्व में चाय का वार्षिक उत्पादन लगभग दो अरब पौंड हैं।
3. 780 ई० में चाय की पत्तियों को जल में उबालकर उनसे एक केक-सा बनाकर उन्हें खाने का रिवाज़ था।
4. चाय के पौधे की ऊँचाई साधारणत: 5 से 30 फुट तक होती है।
5. चाय के सफ़ेद फूल में पीला पराग होने पर हमें सफ़ेद गुलाब का भ्रम होता है।

2. 1. उपर्युक्त काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक–झाँसी की रानी।
2. नाना की मुहँबोली बहन 'छबीली' लक्ष्मीबाई थी।
3. लक्ष्मीबाई नाना साहब के साथ पढ़ती थी।
4. लक्ष्मीबाई की सहेलियाँ बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी थीं।
5. झाँसी वाली रानी लक्ष्मीबाई को वीरता और साहसपूर्ण कार्यों के कारण मर्दानी कहा गया है।

अभ्यास-कार्यपत्रिका–10

1. 1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक–समाज की आवश्यकता : सुमति
2. सुमति का अर्थ है–अच्छी बुद्धि, सद्भाव, उदारता।
3. बुद्धिमान व्यक्ति अच्छी बातें सोचते हैं और अच्छे कर्म करते हैं।
4. सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक/सामाजिक क्षेत्रों में सुमति की आवश्यकता है।
5. आज विश्व में चारों तरफ अशांति फैली है।

2. 1. प्रस्तुत पद्यांश में भारत देश की विशेषताओं का चित्रण किया गया है।
2. भारत देश के पग महासागर पर्वत पखारता है।
3. भारत भूमि पावन नदियों का जल पाकर मधुरालय बन गई है।
4. कण-कण, तृण-तृण को वर्षा की बूंदों से जीवन मिलता है।
5. बादल, नदी।

खंड-ख (व्यावहारिक व्याकरण)

भाषा, लिपि और व्याकरण

अभ्यास-कार्यपत्रिका–11

1. 1. (क) यह मनुष्य के मुख से निकली ध्वनियों का सार्थक समूह है।
(ख) ये ध्वनियाँ सार्थक अर्थ के साथ-साथ व्यवस्थित क्रम में भी होती हैं।
(ग) यह आपसी विचारों के आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम है।
2. दो–(क) लिखित (ख) मौखिक 3. मौखिक 4. लिपि 5. लिखित
6. देवनागरी 7. अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी तथा स्पेनिश भाषा की लिपि रोमन है।8. देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ।
9. जो हमें किसी भी भाषा को शुद्ध तथा व्यवस्थित रूप से लिखने और बोलने के नियमों का ज्ञान कराता है, उसे व्याकरण कहते हैं।
10. व्याकरण का शाब्दिक अर्थ विश्लेषण करना है।
11. (क) भाषा को शुद्ध रूप से बोलना व लिखना सिखाता है, (ख) उसे व्यवस्थित करके नियम बनाता है तथा
(ग) भाषा को परिमार्जित करके उसे मानक रूप प्रदान करता है।
12. देवनागरी 13. भारत की अधिकांश भाषाओं की लिपियाँ बाईं ओर से दाईं ओर लिखी जाती हैं। 14. 14 सितंबर, 1949
15. हिंदी भाषा की विशेषताएँ–(1) इस भाषा में स्वर व्यंजनों का क्रम वैज्ञानिक है। (2) इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए एक अलग चिह्न है।
(3) इसमें जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है।
16. भाषा में परिवर्तन का कारण है–(क) भौगोलिक विभिन्नता (ख) कई पीढ़ियों के अंतर (ग) रुचि और प्रवृत्ति में अंतर।
17. भारतीय संविधान द्वारा बाइस भाषाओं को मान्यता दी गई है।
18. भाषा भाष् धातु से बना है जिसका अर्थ है बोलना। 19. बोली 20. देवनागरी

भाषा, लिपि और व्याकरण

अभ्यास-कार्यपत्रिका–12

1. 1. हिंदी उत्तर प्रदेश की मातृभाषा है। 2. पंजाब, अंडमान निकोबार, महाराष्ट्र।
3. हिंदी को संविधान की धारा 343 के अंतर्गत राजभाषा घोषित किया गया।
4. किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा के स्थानीय रूप को बोली कहते हैं।
5. जिसे बालक सबसे पहले अपने परिवार में रहकर सीखता है, उसे मातृभाषा कहते हैं।
6. आज की हिंदी भाषा खड़ी बोली का साहित्यिक रूप है। 7. संपूर्ण भारत में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी भाषा का प्रयोग होता है।
8. भारत की ब्रज बोली बाद में उपभाषा बन गई। 9. अरबी, उर्दू, सिंधी तीनों की लिपि फ़ारसी है।
10. हिंदी 11. अंग्रेज़ी 12. देवनागरी 13. 14 सितंबर 14. रोमन
15. फिजी, त्रिनिदाद, मॉरीशस आदि। 16. हिंदी, संस्कृत, मराठी, नेपाली 17. फ़ारसी
18. वह भाषा जो देश के कार्यालयों व राज-काज में प्रयोग की जाती है, राजभाषा कहलाती है।
19. वह भाषा जो देश के अधिकतर निवासियों द्वारा प्रयोग में लाई जाती है राष्ट्रभाषा कहलाती है।
20. विद्वानों व शिक्षाविदों द्वारा स्वीकृत भाषा का रूप मानक भाषा कहलाता है।

वर्ण-विचार

अभ्यास-कार्यपत्रिका–13

1. 1. किसी भी भाषा में प्रयुक्त होने वाले वर्णों के व्यवस्थित और क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं।

2. उस छोटी-से-छोटी ध्वनि को जिसके और अधिक टुकड़े नहीं किए जा सकते, उसे वर्ण कहते हैं।

3. वर्ण के दो भेद होते हैं–1. स्वर वर्ण 2. व्यंजन वर्ण।

4. स्वरों के उच्चारण में श्वास वायु बिना किसी रुकावट के मुख से निकलती है, जबकि व्यंजनों के उच्चारण में श्वास वायु रुकावट (घर्षण) के साथ मुख से निकलती है।

5. जिन वर्णों (व्यंजनों) के उच्चारण में जिह्वा मुख के विभिन्न भागों को स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं।

6. स्पर्श व्यंजन संख्या में पच्चीस होते हैं। 7. संयुक्त व्यंजन 8. हिंदी में क्ष, त्र, ज्ञ, श्र चार संयुक्त व्यंजन हैं।

9. ऊष्म व्यंजनों की संख्या चार होती है। 10. अनुनासिक

11. जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन होता है, उन्हें सघोष कहते हैं।

12. जिन व्यंजन वर्णों का उच्चारण करते समय फेफड़ों से निकलने वाली वायु की मात्रा अधिक होती है, उन्हें महाप्राण कहते हैं।

13. स्वरतंत्रियों के आधार पर व्यंजन के दो भेद होते हैं। 14. बोलते समय सुर का जो उतार-चढ़ाव होता है, उसे अनुतान कहते हैं।

15. जब किसी व्यंजन को स्वर रहित दिखाना होता है, तब हल् चिह्न का प्रयोग होता है।

16. **अघोष**–जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन नहीं होता; जैसे–क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स– ये सभी अघोष ध्वनियाँ हैं। (प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा तथा श, ष स वर्ण अघोष ध्वनियाँ हैं।)

17. **अल्पप्राण**– जिन व्यंजन वर्णों का उच्चारण करते समय फेफड़ों से निकलने वाली श्वास वायु की मात्रा कम होती है, उन्हें 'अल्पप्राण' कहते हैं;
जैसे– (क, ग, ङ), (च, ज, ञ), (ट, ड, ण), (त, द, न), (प, ब, म), ड़ और य, र, ल, व अल्पप्राण व्यंजन हैं।
(वर्गों के प्रथम, द्वितीय और पंचम व्यंजन तथा ड़, य, र, ल, व)

18. **अयोगवाह**–अयोगवाह का अर्थ होता है–योग न होने पर भी साथ रहना। व्याकरण में अयोगवाह ऐसी ध्वनियाँ हैं, जो स्वर और व्यंजन नहीं होतीं। अनुस्वार (अं) और विसर्ग (अः) दोनों ध्वनियाँ न स्वर हैं और न व्यंजन। ये दोनों ध्वनियाँ अयोगवाह हैं।

19. अनुस्वार की अपनी अलग स्वतंत्र सत्ता होती है। अनुस्वार का शाब्दिक अर्थ है– जो स्वर के पीछे आए।

20. अनुनासिक ऐसी ध्वनि है, जिसे स्वर से अलग नहीं किया जा सकता।

वर्ण-विचार

अभ्यास-कार्यपत्रिका–14

1. 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗
5. ✓ 6. ✓ 7. ✓ 8. ✗

2. 1. प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ 2. स् + उ + न् + द् + अ + र् + अ
3. द् + उ + क् + आ + न् + अ 4. च् + अ + ञ् + च् + अ + ल् + अ
5. व् + ई + र् + अ + त् + आ 6. र् + अ + क् + ष् + आ

3. 1. विद्वान 2. राष्ट्रीय 3. सच्चाई 4. आज़ाद 5. उज्ज्वल 6. कृपालु

4. 1. दीपावली 2. सुशोभित 3. टिप्पणी 4. भविष्य 5. सौहार्द
6. पारलौकिक 7. तात्कालिक 8. सांसारिक 9. निरीक्षण 10. केंद्रीय

5.

संयुक्ताक्षर	:	शुद्ध	संयुक्त
द्वित्व व्यंजन	:	पक्का	पत्ता
अनुस्वार	:	हंस	बंदर
अनुनासिक	:	हँस	माँग
संयुक्त व्यंजन	:	रक्षक	सर्वज्ञ

शब्द और उनका वर्गीकरण

अभ्यास-कार्यपत्रिका–15

1. 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓
5. ✗ 6. ✗ 7. ✓ 8. ✗

2. 1. गाँव 2. बात 3. हाथी 4. आँसू 5. दूध
6. काँटा 7. खीर 8. नींद 9. आग 10. माह

3. 1. भ्रमर 2. कर्ण 3. कपोत 4. स्वर्णकार 5. दुर्बल
6. पक्षी 7. मृत्यु 8. श्वास

4.

रूढ़	**यौगिक**	**योगरूढ़**
फल	वार्षिकोत्सव	नीलकंठ
घर	ईमानदार	लंबोदर

5.

तत्सम	**तद्भव**	**देशज**	**विदेशी**
ओष्ठ	माथा	डिबिया	टिकट
सप्त	मोर	घाघरा	कालीन

शब्द और उनका वर्गीकरण

अभ्यास-कार्यपत्रिका–16

1. 1. संकर 2. चीनी 3. योगरूढ़ 4. सार्थक 5. अनेकार्थी
6. पर्यायवाची 7. शब्द

2. 1. प्रायः 2. संख्या 3. अनुसंधान 4. पुस्तकालय
5. वास्तव में 6. बीच

3. **अंग्रेज़ी** : टीम
अरबी : नतीजा
फ़ारसी : गुलाब
तुर्की : दारोगा, बेगम
पुर्तगाली : तौलिया, गमला
फ्रेंच : कारतूस

4. 1. तत्सम 2. रूढ़ 3. विकारी 4. योगरूढ़

5. **विकारी** : हमारा, नेता, सेना।
अविकारी : दिल्ली, तेज, धीरे-धीरे, इसलिए, के सामने।

शब्द निर्माण या रचना (उपसर्ग तथा प्रत्यय)

अभ्यास-कार्यपत्रिका–17

1. वे शब्दांश जो किसी शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें 'उपसर्ग' कहते हैं; जैसे–
प्र – प्रबल, प्रयत्न, प्रचार, प्रताप, प्रलय, प्रकार।
अति – अत्यधिक,अत्यंत, अतिरिक्त, अत्याचार।
स्व – स्वतंत्र, स्वराज्य, स्वच्छंद, स्वदेश, स्वजन, स्वचालित।

2. 1. आदान 2. अपकीर्ति 3. अनमोल 4. अभिलाषा 5. प्रतिनिधि
6. तत्सम 7. बेगुनाह 8. सहयोग

3. 1. दुस् 2. चिर 3. प्राक् 4. अधि 5. निष्
6. अति 7. अन् 8. सत् 9. दु 10. निर्

4.

उपसर्ग	**मूलशब्द**
1. प्रति	ध्वनि
2. अनु	क्रम
3. उप	देश
4. बा	कायदा
5. ना	समझ
6. ला	परवाह
7. सत्	भावना
8. सम्	पूर्ण
9. आ	हार
10. प्र	बल

5.

उपसर्ग	**नए शब्द**
1. आ	आजीवन
2. बे	बेलगाम
3. बद	बदनाम
4. अति	अत्यधिक
5. अभि	अभियोग
6. सम्	सम्मान
7. नि	निडर
8. पर	परलोक

शब्द निर्माण या रचना (उपसर्ग तथा प्रत्यय)

अभ्यास-कार्यपत्रिका–18

1. वे शब्दांश जो किसी शब्द के पीछे जुड़कर उसका अर्थ बदल देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

2. प्रत्यय की विशेषताएँ– प्रत्यय शब्दांश होते हैं, शब्द नहीं।
इनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।
अर्थ में परिवर्तन लाते हैं।

3. प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं; 1. कृत् प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

कृत् प्रत्यय– जो प्रत्यय धातुओं के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं। जैसे–

आई – पढ़, सुन – पढ़ाई, सुनाई

ती – बढ़, घट – बढ़ती, घटती

तद्धित प्रत्यय– जो प्रत्यय संज्ञा/सर्वनाम या विशेषण के अंत में लगकर नए शब्द बनाते हैं। जैसे–

आहट – गरम, कड़वा – गरमाहट, कड़वाहट

एरा – मम – ममेरा

ईय – भारत, राष्ट्र – भारतीय, राष्ट्रीय

4. 1. बलवान, पहलवान 2. रसोइया, बिटिया 3. छुटपन, बचपन 4. लघुत्व, गुरुत्व 5. दासता, एकता
6. नैतिक, ऐतिहासिक 7. भुलक्कड़, घुमक्कड़ 8. मूर्तिकार, शिल्पकार 9. बुढ़ापा, मोटापा 10. सुनारिन, कहारिन

5.

	उपसर्ग		मूलशब्द		प्रत्यय
1.	निर्	+	दय	+	ई
2.	दुस्	+	साहस	+	ई
3.	पुरा	+	तन	+	ता
4.	बद	+	चलन	+	ई
5.	अभि	+	मान	+	ई
6.	स्व	+	तंत्र	+	ता
7.	परि	+	पूर्ण	+	ता
8.	पर	+	तंत्र	+	ता
9.	अप	+	मान	+	इत
10.	जाल	+	साज़	+	ई

6.

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
सरलता	सरल	ता
भारतीय	भारत	ईय
साहित्यिक	साहित्य	इक
मित्रता	मित्र	ता

शब्द निर्माण: संधि तथा समास

अभ्यास-कार्यपत्रिका–19

1. परस्पर दो वर्णों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता है, उसे '**संधि**' कहते हैं;
जैसे– हिम + आलय = हिमालय, (अ + आ = आ) रजनी + ईश = रजनीश, (ई + ई = ई) सु + आगत = स्वागत (उ + आ = वा)

2. संधि के नियमों के अनुसाार मिले हुए दोनों वर्णों को अलग करने की प्रक्रिया को '**संधि-विच्छेद**' कहते हैं;
जैसे– हिमालय = हिम + आलय, स्वागत = सु + आगत, रजनीश = रजनी + ईश

3. संधि के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं:
1. **स्वर-संधि:** जैसे– रेखा + अंकित = रेखांकित, रमा + ईश = रमेश
2. **व्यंजन-संधि:** जैसे– उत् + लेख = उल्लेख, उत् + चारण = उच्चारण
3. **विसर्ग-संधि:** जैसे– नि: + रस = नीरस, मन: + रथ = मनोरथ

4. 1. शुभ + अवसर 2. पुरुष + अर्थ 3. सत्य + आग्रह 4. न्याय + आलय 5. प्रति + ईक्षा
6. देव + इंद्र 7. नारी + ईश्वर 8. महा + आशय 9. भाव + अर्थ 10. रत्न + आकर

5. 1. शरणार्थी 2. मतैक्य 3. फणीश्वर 4. अत्यानंद 5. अत्याचार
6. अन्वय 7. पित्रादेश 8. पूर्ण

6. 1. उदक 2. नर 3. उत्तर 4. इंद्र 5. लोक
6. ऊर्मि 7. उदय 8. सु

शब्द निर्माण: संधि तथा समास

अभ्यास-कार्यपत्रिका–20

1. दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनने वाले शब्द को 'समास' कहते है; जैसे–
गंगा का जल – गंगाजल
विद्या के लिए आलय – विद्यालय
आप पर बीती – आपबीती

2. समास के निम्नलिखित चार भेद होते हैं:
1. अव्ययीभाव समास 2. द्वंद्व समास 3. बहुव्रीहि समास 4. तत्पुरुष

3. जिस समास में विशेषण-विशेष्य तथा उपमान-उपमेय का संबंध पाया जाता है, उसे 'कर्मधारय समास' कहते हैं; जैस–

समस्तपद	**विशेषण**	**विशेष्य**	**विग्रह**
महात्मा	महान	आत्मा	महान है जो आत्मा
नीलकंठ	नीला	कंठ	नीला है जो कंठ
समस्तपद	**उपमान**	**उपमेय**	**विग्रह**
स्वर्णलता	स्वर्ण	लता	स्वर्ण के समान लता
चंद्रमुख	चंद्र	मुख	चंद्रमा के समान मुख

4. 1. कमलनयन 2. सत्याग्रह 3. यथाशक्ति 4. दशानन
5. सतसई 6. हार-जीत

5.

शब्द	**समास-विग्रह**	**सामस का नाम**
1. यथासमय	समय के अनुसार	अव्ययीभाव
2. ग्रामगत	ग्राम को गत	तत्पुरुष
3. नीलकंठ	नील है कंठ जिसका (शिव)	बहुव्रीहि समास
4. धर्माधर्म	धर्म या अधर्म	द्वंद्व समास
5. पंजाब	पाँच आबों का समूह (नदियाँ)	द्विगु समास
6. देहलता	देह रूपीलता	कर्मधारय समास
7. वीणापाणि	वीणा है पाणि में जिसके (सरस्वती)	बहुव्रीहि समास
8. महाविद्यालय	महान है जो विद्यालय	कर्मधारय समास
9. त्रिलोक	तीन लोकों का समाहार	द्विगु समास

6. 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗
4. ✓ 5. ✓ 6. ✗

शब्द भंडार: पर्यायवाची शब्द

अभ्यास-कार्यपत्रिका–21

1. 1. पक्षी 2. केश 3. बेटा 4. मेहमान
5. पत्ता 6. रात 7. बाण 8. पेड़

2. 1. संध्या, सायं (ग) शाम, दिवांत
2. प्रेम, अनुराग (छ) प्रीति, स्नेह
3. बर्फ़, तुहिन (ज) तुषार, हिम
4. श्वेत, सफ़ेद (ख) उज्ज्वल, धवल
5. संपूर्ण, सारा (च) सकल, समस्त
6. राम, रामचंद्र (ङ) राघव, रघुनंदन
7. गरमी, ताप (घ) ग्रीष्म, निदाघ
8. बादल, जलद (क) पयोद, वारिद

3. 1. सरिता, तटिनी 2. योग्य, निपुण 3. गर्व, दर्प 4. असि, खड्ग
5. वसन, वस्त्र 6. कष्ट, पीड़ा 7. जेवर, गहना 8. पिक, श्यामा

4. 1. थका-माँदा यात्री पेड़ की छाया में बैठ आराम करने लगा। 2. रात के समय खाना खाकर हम हर रोज़ सैर के लिए जाते हैं।
3. आकाश में बादल छाए देख किसान खुशी से झूम उठे। 4. प्रत्येक मनुष्य अपना कर्तव्य पूरा करता है।

शब्द भंडार: विलोम शब्द

अभ्यास-कार्यपत्रिका–22

1. 1. लाभ 2. परतंत्र 3. ज्ञानी 4. आयात 5. दुर्जन 6. असफलता
7. कृश 8. उद्यमी

2. 1. उग्र 2. भक्षक 3. अमृत 4. उदय 5. आरोह 6. धनी
7. अवगुण 8. पाताल

3. 1. वैकल्पिक 2. मूर्ख 3. स्वहित 4. निर्माण 5. शीतल 6. फूल
7. अनुपयोग 8. अवरोह 9. अपयश 10. परमार्थ 11. भक्षक 12. कृष्ण
13. बेचैन 14. स्थावर 15. अपेक्षा 16. सज्जन

4. 1. कड़वी 2. पिछली 3. मोटी 4. ठंडा 5. जीत 6. सगुण
7. अच्छे 8. अनुज

शब्द भंडार: अनेकार्थी शब्द

अभ्यास-कार्यपत्रिका–23

1. 1. वोट, राय 2. वर्ण, शोभा 3. समूह, पत्ता 4. शरीर, तुच्छ 5. सतह, नींव
6. अचल, स्थिर 7. तपस्या, ताप 8. पक्षी, ग्रह 9. कौशल, रस्सी 10. हाथ, टैक्स

2. 1. सर (ग) तालाब, चिता, बाण
2. हरि (ङ) शिव, साँप, विष्णु
3. प्रकृति (घ) स्त्री, माया, परमात्मा
4. जलज (छ) चंद्रमा, मोती, शंख
5. उत्तर (च) अतीत, जवाब, दिशा
6. क्षेत्र (ख) भूमि, खेत, मैदान
7. मधु (झ) शहद, शराब, वसंत
8. नग (क) पर्वत, नगीना, वृक्ष
9. हंस (ज) शिव, घोड़ा, सूर्य
10. शून्य (ञ) बिंदु, अभाव, खाली

3. 1. फल 2. अलि 3. उत्तर 4. घट 5. दल
6. घन 7. आम 8. ग्रहण 9. वर 10. कनक

शब्द भंडार: एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

अभ्यास-कार्यपत्रिका–24

1. 1. किसी वस्तु की होती है
किसी प्राणी की होती है

2. किसी विषय की गहरी जानकारी
सही-गलत (अच्छाई-बुराई) का निर्णय करने की शक्ति

3. दोनों पक्ष सक्रिय होते हैं
एक पक्ष की ओर से किया जाने वाला प्रयास

4. जल के पास थोड़ा-सा किनारा
किनारे-किनारे दूर तक का विस्तृत भाग

5. ज्ञान का न होना
जानकारी की कमी होना

6. शक्ति या योग्यता का उचित महत्व/ज्ञान
अपने को बहुत बड़ा और दूसरों को कुछ न समझना

2. 1. अभिवादन 2. दुर्बल 3. दया 4. मृत्यु 5. आशंका
6. अधिक 7. निवेदन 8. ग्लानि 9. परिश्रम 10. भ्रम
11. अमूल्य 12. अगम 13. पाप 14. अस्त्र

शब्द भंडार: वाक्यांशों के लिए एक शब्द

अभ्यास-कार्यपत्रिका–25

1. 1. अनुपम 2. अज्ञ 3. अमर 4. अपठित 5. प्रत्यक्ष
6. अनुगामी 7. अभियुक्त 8. पारदर्शी

2. 1. निम्नलिखित वाक्य ध्यान से पढ़िए। 2. भारत में अनेक दर्शनीय स्थल हैं।
3. कल हमारे विद्यालय में वार्षिक उत्सव मनाया जाएगा। 4. आत्महत्या जघन्य अपराध है।
5. आजकल परीक्षा में अपठित पद्यांशों पर आधारित प्रश्न भी पूछे जाते हैं।
6. ये गोपनीय दस्तावेज हैं, इन्हें ध्यान से रखो। 7. गोपी कामचोर व्यक्ति है।
8. संसार में किसी पर अंधविश्वास नहीं करना चाहिए।

3. 1. (ख) गगनचुंबी 2. (ग) उऋण 3. (घ) अभेद्य 4. (क) कुशाग्रबुद्धि 5. (ख) त्रैमासिक
6. (ग) दूरदर्शी 7. (घ) सर्वव्यापक 8. (क) अवैतनिक

4. 1. वातावरण 2. अंतर्यामी 3. दैनिक 4. मधुरभाषी 5. पंचतंत्र
6. आस्तिक 7. छात्रावास 8. वक्ता

शब्द भंडार: समरूपी भिन्नार्थक शब्द

अभ्यास-कार्यपत्रिका–26

1. 1. नजदीक-बंधन 2. कारखाना/1760 गज़ की दूरी 3. उर्वरक-खाने योग्य 4. घमंड-घास
5. सीमाबद्ध-सभा/कमेटी 6. पैर-पगड़ी 7. बर्फ़-सोना 8. उत्सव-गंदा
9. साधन-कान 10. हवा-हनुमान

2. 1. पुरुष 2. उधार 3. आचार्य 4. श्याम 5. योग्य
6. उपेक्षा 7. कुल 8. शौक 9. कर्म 10. कटि

3. 1. गृहकार्य 2. सुत 3. पानी 4. हिय 5. लक्ष्य
6. समान 7. और 8. आसमान 9. अनिल 10. नियत

संज्ञा (लिंग, वचन तथा कारक)

अभ्यास-कार्यपत्रिका–27

1. जिस शब्द के द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम का बोध हो, उसे संज्ञा कहते हैं। उदाहरण राम, आगरा, मेज़, किताब आदि।

2. 1. संज्ञा के तीन भेद होते हैं। 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञाओं की रचना पाँच प्रकार से की जा सकती है।
4. जातिवाचक संज्ञा द्रव्यवाचक संज्ञा का भेद है। 5. द्रव्यवाचक संज्ञा पदार्थ एवं धातुओं का बोध कराती है।

3. 1. भाववाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. व्यक्तिवाचक संज्ञा 4. जातिवाचक संज्ञा
5. व्यक्तिवाचक संज्ञा 6. जातिवाचक संज्ञा 7. जातिवाचक संज्ञा 8. व्यक्तिवाचक संज्ञा

4. 1. आलस/आलस्य 2. पथराव 3. खेल-कूद, हार-जीत 4. स्वास्थ्य 5. अपनापन
6. बुराई 7. मित्रता 8. गंभीरता

5. 1. गंगा 2. भाई, बहन 3. खुशबू 4. चतुराई 5. उल्लास
6. गांधी जी 7. विद्यार्थियों 8. शेर 9. चढ़ाई 10. सच्चाई

संज्ञा (लिंग, वचन तथा कारक)

अभ्यास-कार्यपत्रिका–28

1. 1. लड़कपन 2. चढ़ाई 3. सज्जनता 4. बहाव 5. स्वामित्व
6. तपस्या 7. रुकावट 8. चौड़ाई 9. सर्दी 10. मुक्ति
11. भूख 12. धनी 13. डकैती 14. पिटाई 15. देरी
16. यौवन 17. माँग 18. नेतृत्व 19. लूट 20. अहंकार
21. कंजूसी 22. घबराहट 23. दृढ़ता 24. खटास 25. धैर्य
26. पतन 27. हैवानियत 28. दोस्ती 29. संतोष 30. मनाही

2. 1. **ता** : सुंदरता मानवता
2. **ई** : ऊँचाई अच्छाई
3. **आई** : पढ़ाई तरुणाई
4. **पन** : बचपन लड़कपन
5. **आवट** : सजावट गिरावट

संज्ञा (लिंग, वचन तथा कारक)

अभ्यास-कार्यपत्रिका–29

1. 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗
5. ✓ 6. ✗ 7. ✗ 8. ✓

2. 1. ठकुराइन 2. आचार्या 3. निर्मात्री 4. विदुषी
5. कवयित्री 6. लेखक 7. सम्राट 8. नायिका

3. 1. साध्वी 2. आज्ञाकारिणी 3. कवयित्री 4. नायिका
5. हलवाई 6. रानी 7. गुणवती 8. शेरनी

4. 1. हमारे अध्यापक पढ़ा रहे हैं। 2. राधा के मामा मुंबई में रहते हैं।
3. अपनी पुस्तक उठाइए और दूसरी कहानी पढ़िए। 4. पड़ोसी की बालिका छत पर खेल रही है।
5. सीता की देवरानी अच्छा गाती है। 6. बलवती स्त्री रूपवती भी है।
7. प्रेमचंद हिंदी के एक प्रसिद्ध लेखक हैं। 8. वनवासी तपस्वी बहुत बुद्धिमान है।

5. 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. तितली, गिलहरी 4. उभयलिंग

संज्ञा (लिंग, वचन तथा कारक)

अभ्यास-कार्यपत्रिका–30

1. 1. संज्ञा के जिस रूप से एक अथवा अनेक का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं।
2. भाववाचक संज्ञा 3. पानी, आग 4. वीर, बाल

2. 1. खिलौने 2. केले 3. कविताएँ 4. दुकानें
5. रीतियाँ 6. तितलियाँ 7. लुटियाँ 8. कलियाँ

3. 1. रमा के साथ उसकी सखियाँ होंगी। 2. तेज हवा से पौधे भी हिलने लगे।
3. मोहन ने कहानियाँ लिखीं। 4. उसने बड़ी बहन के लिए साड़ियाँ खरीदीं।
5. चिड़ियाँ पेड़ पर बैठी हैं। 6. तमाशेवाले की बंदरियाँ रुठ गईं।
7. मेरी पुस्तकें लौटा दीजिए। 8. सीता ने गाने गाए।

4. 1. जीव-जंतुओं 2. उम्मीदें 3. रोटियाँ 4. बेटियाँ
5. चित्र 6. अध्यापिकाएँ 7. गलियों 8. नदियाँ

संज्ञा (लिंग, वचन तथा कारक)

अभ्यास-कार्यपत्रिका–31

1. 1. ने 2. अप्राणीवाचक 3. कर्ता, करण, अपादान, संबंध, अधिकरण तथा संबोधन
4. का, के, की 5. कर्म कारक 6. करण कारक

2. 1. अपादान 2. संबंध 3. करण 4. अपादान 5. संप्रदान

3. 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓
6. ✓ 7. ✗

4. करण कारक–करण का अर्थ है–साधन। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध हो, उसे 'करण कारक' कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'से/के द्वारा/के साथ/द्वारा' है; जैसे–

- राम ने **पेंसिल से** चित्र बनाया।
- हमने **दाल के साथ** रोटी खाई।
- हमने यह सूचना **पत्र के द्वारा** भेजी।

अपादान कारक–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने, तुलना करने या डरने का बोध हो, उसे 'अपादान कारक' कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'से' है; जैसे–

- **पेड़ से** पत्ते गिरे।
- बच्चा **आग से** डरता है।
- गीता **सीता से** अच्छा गाती है।

5. 1. करण 2. अपादान 3. करण 4. अपादान 5. अपादान
6. अपादान 7. करण

संज्ञा (लिंग, वचन तथा कारक)

अभ्यास-कार्यपत्रिका–32

1. कर्म कारक और संप्रदान कारक–दोनों कारकों में 'को' विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। जहाँ 'को' का अर्थ देने के अर्थ में निकले, तो वहाँ संप्रदान कारक होता है तथा बाकी सभी स्थानों पर 'को' का प्रयोग कर्म के रूप में समझना चाहिए; जैसे–

सोहन ने **मोहन को** पैसे दिए। (संप्रदान के अर्थ में)
सोहन ने **मोहन को** डाँटा। (कर्म के अर्थ में)

2. 1. कर्म 2. संप्रदान 3. संप्रदान 4. संप्रदान 5. कर्म
6. कर्म 7. संप्रदान 8. संप्रदान

3. 1. पर, से 2. के, के लिए 3. को, में 4. में, से 5. के, पर
6. को, में 7. ने, से 8. में, का 9. के, को 10. से, की

4. 1. रमा ने पढ़ाई कर ली। 2. पिता जी कार से कार्यालय जाते हैं। 3. बच्चे को मत डाँटो।
4. सफलता के लिए परिश्रम आवश्यक है। 5. पेड़ पर घोंसले हैं। 6. चाचा बाजार से फल लेकर आए।

सर्वनाम

अभ्यास-कार्यपत्रिका–33

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

2. सर्वनाम के छः भेद होते हैं–1. पुरुषवाचक सर्वनाम 2. निश्चयवाचक सर्वनाम 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 4. संबंधवाचक सर्वनाम 5. प्रश्नवाचक सर्वनाम 6. निजवाचक सर्वनाम।

3. जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध होता है, वे 'निश्चयवाचक सर्वनाम' कहलाते है; जैसे–यह, वह। तथा जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध न हो, वे 'अनिश्चयवाचक सर्वनाम' कहलाते है; जैसे–कोई, कुछ।

4. जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, वे 'प्रश्नवाचक सर्वनाम' कहलाते हैं; जैसे– कौन, क्या? और जो सर्वनाम शब्द स्वयं के लिए प्रयुक्त होता है, उसे 'निजवाचक सर्वनाम' कहते हैं; जैसे– स्वयं, खुद, अपने-आप, अपना।

5. 1. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 2. आप 3. तू

6. 1. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 2. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 3. निश्चयवाचक सर्वनाम 4. प्रश्नवाचक सर्वनाम
5. निजवाचक सर्वनाम 6. प्रश्नवाचक सर्वनाम

7. 1. उन्हें 2. यह 3. अपने-आप 4. स्वयं 5. जिसे, वही 6. कौन

8. 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ 6. ✓

सर्वनाम

अभ्यास-कार्यपत्रिका–34

1. 1. हमने, पुरुषवाचक 2. कुछ, अनिश्चयवाचक 3. स्वयं, निजवाचक 4. मुझसे, पुरुषवाचक 5. उसके, पुरुषवाचक
6. तुम्हें, पुरुषवाचक 7. जैसी, वैसी, निश्चयवाचक 8. अपने-आप, निजवाचक

2. 1. कोई 2. तुम मुझे, मैं तुम्हें 3. उन्होंने 4. जो, वह 5. इन्हें
6. क्या 7. किसी से 8. कुछ 9. जो, वह 10. तू

3. 1. तुम कहते हो कि मैं बहुत बोलता हूँ। 2. किसी ने शीशा तोड़ दिया।
3. मुझे कुछ खाने को दीजिए। 4. वे तेज़ चलते हैं।
5. प्रधानाचार्य के पास कोई खड़ा है। 6. उसने खाना खा लिया है।
7. श्रीमान, मैं बड़ी दूर से आया हूँ।

विशेषण

अभ्यास-कार्यपत्रिका–35

1. 1. विशेषण 2. संकेतवाचक 3. संज्ञा 4. प्रविशेषण
5. चार 6. सुंदर

2. 1. परिमाणवाचक विशेषण 2. संख्यावाचक विशेषण

3. 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗
6. ✓ 7. ✗ 8. ✓ 9. ✓ 10. ✓

4. 1. दैनिक, समाचार-पत्र 2. परिश्रमी, छात्र 3. थोड़ी, चीनी 4. कुछ, फल
5. पीले, वस्त्र 6. पाँच, मीटर

5. **संज्ञा** : भारतीय शक्तिशाली
सर्वनाम : वैसा हमारा
क्रिया : तैराक बनावटी
अव्यय : पिछला बाहरी

विशेषण

अभ्यास-कार्यपत्रिका–36

1. 1. आर्थिक 2. जोशीला 3. चमकीला 4. नागरिक 5. पैतृक
6. धार्मिक 7. झगड़ालू 8. कुलीन 9. लौकिक 10. चर्चित

2. 1. गुणवाचक 2. अनिश्चित संख्यावाचक 3. निश्चित संख्यावाचक 4. गुणवाचक
5. संकेतवाचक 6. निश्चित संख्यावाचक 7. अनिश्चित संख्यावाचक

3. 1. बिल्कुल 2. कम 3. बहुत 4. गहरा 5. लगभग
6. सबसे 7. बिल्कुल 8. अत्यंत

4. 1. कुछ 2. उस 3. बड़ा/विशाल 4. बहुत 5. इस
6. कुछ 7. दूषित 8. बहुत

क्रिया और काल

अभ्यास-कार्यपत्रिका–37

1. संयुक्त क्रिया–जब किसी वाक्य में एक से अधिक क्रियाएँ मिलकर मुख्य क्रिया का काम करती हैं, तो उन्हें 'संयुक्त क्रिया' कहते हैं;
जैसे– मोहन ने खाना **खा लिया**। रवि **रोने लगा**। सोहन बाज़ार **चला गया**। वह **पढ़ रहा है**।

2. नामधातु क्रिया– संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों में प्रत्यय लगाकर जो क्रियाएँ बनती हैं, उन्हें 'नामधातु क्रियाएँ' कहते हैं;
जैसे– **संज्ञा** – बात – बतियाना
सर्वनाम – अपना – अपनाना
विशेषण – गरम – गरमाना
साठ – सठियाना

3. प्रेरणार्थक क्रियाएँ– जिन क्रियाओं में कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने की प्रेरणा देता है, उसे 'प्रेरणार्थक क्रियाएँ' कहते हैं;
जैसे– सीता ने धोबी से कपड़े **धुलवाए**। पिता जी ने सोहन से फल **मँगवाए**।
अध्यापक बच्चों से पाठ **पढ़वाता** है।

4. पूर्वकालिक क्रिया–जब मुख्य क्रिया के होने से पूर्व किसी क्रिया के पूर्ण (पूरा) होने का भाव हो, तो उसे 'पूर्वकालिक क्रिया' कहते हैं;
जैसे– रवि **पढ़कर** सो गया। सोहन **नहाकर** चला गया। गीता **नहाकर** पूजा करती है।

5. 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗
6. ✓ 7. ✗ 8. ✓ 9. ✗ 10. ✓

6. 1. कूद गया 2. खा लिया 3. घूमने गए हैं 4. गा रहा है
5. कर रहे हैं 6. जा चुका है 7. पकड़ लिया होगा 8. चल पड़ा

7. 1. संयुक्त क्रिया 2. प्रेरणार्थक क्रिया 3. पूर्वकालिक क्रिया 4. नामधातु क्रिया 5. समस्त क्रिया
6. प्रेरणार्थक क्रिया

क्रिया और काल

अभ्यास-कार्यपत्रिका–38

1. सकर्मक–सकर्मक क्रिया का अर्थ है–कर्म सहित अर्थात् कर्म के साथ क्रिया। जिन क्रियाओं के व्यापार का फल सीधा कर्म पर पड़ता है, उसे 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं; जैसे–
रवि पुस्तक पढ़ता है। कुम्हार घड़े बनाता है।
माँ खाना बनाती है। सोहन ने दूध पिया।

अकर्मक–अकर्मक क्रिया का अर्थ है–कर्म रहित क्रिया। जिन क्रियाओं के व्यापार का फल कर्ता है, उसे 'अकर्मक क्रिया' कहते हैं; जैसे–
पक्षी उड़ते हैं। बालक सोता है।
माँ टहलाती है। सोहन पढ़ता है।

2. 1. सकर्मक 2. अकर्मक 3. अकर्मक 4. सकर्मक 5. अकर्मक
6. अकर्मक 7. सकर्मक 8. अकर्मक

3. 1. दिया, चला गया 2. बातें करते 3. खिलाओ 4. करूँगा 5. बनवाया
6. उड़ रहे हैं 7. पिलाई 8. बुलवा 9. पढ़ाई

4. 1. पढ़ता है 2. लिखवाया 3. पढ़ रही है 4. पिलाओ 5. खटखटा रहा है
6. सुनाई दे रहा था 7. प्रेरणा दी गई 8. खिलाओ

5. 1. बतियाना 2. हथियाना 3. लँगड़ाना 4. अपनाना

अभ्यास-कार्यपत्रिका–39

क्रिया और काल

1. क्रिया के जिस रूप से किसी काम के करने या होने के समय का बोध होता है, उसे 'काल' कहते है।
भेद– 1. वर्तमान काल 2. भूतकाल 3. भविष्यत् काल।

2. 1. भूतकाल 2. भूतकाल 3. भविष्यत् काल 4. वर्तमान काल 5. भूतकाल
6. वर्तमान काल 7. वर्तमान काल 8. भविष्यत् काल

3. 1. भूतकाल 2. वर्तमान काल 3. भूतकाल 4. भविष्यत् काल
5. भविष्यत् काल 6. वर्तमान काल

4. 1. गीता स्कूल गई। 2. राम कहानी पढ़ेगा। 3. माँ खाना बनाती है।

5. छात्र स्वयं करें।

6. 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗
5. ✗ 6. ✓ 7. ✗ 8. ✓

अव्यय या अविकारी शब्द: क्रियाविशेषण

अभ्यास-कार्यपत्रिका–40

1. 1. जो अविकारी शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं।

2. क्रियाविशेषण के चार भेद हैं–(1) कालवाचक क्रियाविशेषण (2) स्थानवाचक क्रियाविशेषण (3) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण (4) रीतिवाचक क्रियाविशेषण।

3. जो शब्द क्रिया की समय-संबंधी विशेषता का बोध कराते हैं, उन्हें कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

4. जिन शब्दों से क्रिया के नाप-तौल (मात्रा) से संबंधित विशेषता का बोध होता है, उन्हें **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण** कहते हैं।

5. जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के होने की रीति या विधि का बोध होता है, उन्हें **'रीतिवाचक क्रियाविशेषण'** कहते हैं; जैसे–धीरे-धीरे, शीघ्र, ध्यानपूर्वक, अचानक आदि।

6. जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के होने के स्थान का बोध होता है, उन्हे **'स्थानवाचक क्रियाविशेषण'** कहते हैं; जैसे–यहाँ, वहाँ, ऊपर, नीचे, भीतर, बाहर आदि।

2. 1. रीतिवाचक 2. रीतिवाचक 3. स्थानवाचक 4. कालवाचक 5. परिमाणवाचक
6. कालवाचक 7. रीतिवाचक 8. कालवाचक 9. परिमाणवाचक

3. 1. धीरे-धीरे 2. बहुत 3. अचानक 4. जल्दी 5. प्रतिदिन
6. अवश्य 7. दिनभर 8. भीतर 9. धड़ाधड़

4. छात्र स्वयं करें।

अव्यय या अविकारी शब्द: संबंधबोधक

अभ्यास-कार्यपत्रिका–41

1. वे अविकारी शब्द संबंधबोधक कहलाते हैं, जो संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होकर उनका वाक्य के अन्य संज्ञा, सर्वनाम शब्दों से संबंध का बोध कराते हैं; जैसे– पेड़ **के ऊपर** पक्षी बैठे हैं।

सुरेश **की तुलना** में मोहन अधिक बुद्धिमान है। माँ अंबिका **के बिना** खाना नहीं खाती।

2. 1. से लेकर 2. के साथ 3. के ऊपर 4. के बिना 5. के सामने
6. के ऊपर 7. से पहले 8. के विपरीत 9. के भीतर 10. के बिना

3. 1. से पहले 2. के ऊपर 3. के निकट 4. से पहले 5. के द्वारा
6. के अंदर 7. के सामने 8. के पीछे 9. के सामने 10. से पहले

4. स्वयं कीजिए।

अव्यय या अविकारी शब्दः समुच्चयबोधक

अभ्यास-कार्यपत्रिका–42

1. वे अविकारी शब्द जो दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं, उन्हें '**समुच्चयबोधक**' कहते हैं;

गांगुली **और** सचिन ने मिलकर एक सौ उन्नीस रन बनाए।

हम पिकनिक पर जाना चाहते थे, **मगर** पानी बरसने के कारण जा न सके।

परिश्रम कर लो, **अन्यथा** अच्छे अंक नहीं आएँगे।

2. 1. कि 2. अतः 3. अन्यथा 4. परंतु 5. क्योंकि
6. यदि, तो 7. मगर 8. यद्यपि-तथापि 9. ताकि

3. 1. लेकिन 2. इसलिए 3. मानो 4. यदि, तो 5. मगर
6. चाहे, या 7. ताकि 8. यदि, तो 9. इसलिए

4. स्वयं लिखिए।

अव्यय या अविकारी शब्दः विस्मयादिबोधक

अभ्यास-कार्यपत्रिका–43

1. वे शब्द जो हर्ष, शोक, घृणा, आश्चर्य जैसे भावों को प्रकट करते हैं, उन्हें 'विस्मयादिबोधक' कहते हैं; जैसे–

हे भगवान! उसकी रक्षा करना। **आहा!** क्या चित्र बनाया है।

शाबाश! बहुत सुंदर काम किया है। **अरे!** पूरी बात तो सुन लो।

2. 1. वाह!, हर्षबोधक 2. बचो!, चेतावनीबोधक 3. हे राम!, पीड़ाबोधक 4. अरे!, विस्मयबोधक
5. बाप रे बाप!, विस्मयबोधक 6. सावधान!, चेतावनीबोधक 7. विजयी हो!, आशीर्वादबोधक
8. छिः! छिः!, घृणा/तिरस्कारबोधक 9. अरे!, विस्मयबोधक/आश्चर्यबोधक 10. वाह!, हर्षबोधक

3. 1. हे प्रभु! 2. छिः! 3. अरे! 4. ओफ़!
5. अहा! 6. आह!

4. 1. बहुत सुंदर! शहर में फिर से सरकस वाले आ गए हैं। 2. होशियार! वहाँ कीचड़ है।
3. धिक्! कभी अपना मुँह मत दिखाना। 4. जी हाँ! आप बिल्कुल ठीक कह रही हैं।
5. हे राम! यह क्या हो गया? 6. क्या खूब! बहुत सुंदर चित्र बना है।
7. बाप रे! कितना भयानक दृश्य है।

अव्यय या अविकारी शब्दः निपात

अभ्यास-कार्यपत्रिका–44

1. 1. जो अविकारी शब्द वाक्य में किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ पर विशेष प्रकार का बल देते हैं, उन्हें निपात कहते हैं।
मुझे बोलने तो दो, मैं सब बता दूँगा। मैं भी आपके साथ बाज़ार चलूँगा।

2. 1. भी 2. ही 3. ही 4. भी 5. तो
6. तक 7. तो 8. तक 9. मात्र 10. भर

3. 1. मैं भी आपके साथ चलूँगा। 2. उसने चिट्ठी तक नहीं लिखी।
3. मुझे सौ रुपये मात्र चाहिए। 4. यह काम सीता ही करेगी।
5. रघु को केवल पचास रुपये की आवश्यकता है। 6. उनसे मिलने तो दो, सब पता चल जाएगा।
7. मैं उसे जानता भर हूँ।

4. छात्र स्वयं करें।

वाक्य

अभ्यास-कार्यपत्रिका–45

1. शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं। एक वाक्य में साधारण रूप से कर्ता और क्रिया का होना आवश्यक है। इस आधार पर वाक्य के दो मुख्य अंग होते हैं–1. उद्देश्य 2. विधेय।

2. आठ **3.** तीन

4. 1. विद्यार्थी 2. श्रीनगर 3. मजदूरों ने 4. भले लोग

5. 1. सफ़ाई के महत्त्व को जान लिया 2. एक कविता लिखी 3. बड़े पुत्र राम का विवाह किया
4. सुबह से ही पढ़ रहा है

6. 1. इच्छावाचक वाक्य 2. संदेहवाचक वाक्य 3. संकेतवाचक वाक्य 4. विधानवाचक वाक्य 5. आज्ञावाचक वाक्य
6. सरल वाक्य 7. संयुक्त वाक्य 8. मिश्र वाक्य 9. मिश्र वाक्य 10. संयुक्त वाक्य

7. 1. संयुक्त वाक्य 2. मिश्र वाक्य 3. मिश्र वाक्य 4. सरल वाक्य 5. संयुक्त वाक्य
6. सरल वाक्य

8. 1. चाय का एक कप ले आइए। 2. गाजर काटकर खरगोश को खिलाओ।
3. हमारा लक्ष्य देश की चहुँमुखी प्रगति होना चाहिए। 4. उसे अपने बहादुर पुत्र पर गर्व है।

विराम-चिह्न

अभ्यास-कार्यपत्रिका–46

1. भाषा में वक्ता या लेखक द्वारा अपने भावों को लिखते या बोलते समय विरामों को प्रकट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें '**विराम-चिह्न**' कहते हैं;
जैसे– रोको मत, जाने दो। रोको, मत जाने दो।

2. 1. अल्पविराम-चिह्न 2. विस्मयादिसूचक-चिह्न 3. अपूर्ण विराम-चिह्न 4. निर्देशक-चिह्न 5. त्रुटिपुरक-चिह्न
6. अर्धविराम-चिह्न

3. 1. (।), ओडिसा में बाढ़ आ गई; सभी अपना घर-बार छोड़कर जाने लगे।
2. ( ), लता मंगेशकर भारत की कोकिला (मीठा गाने वाली) हैं।
3. (०), पं० नेहरू एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। 4. (!), वाह! कितना सुंदर दृश्य है।

4. 1. युवक ने कहा, "लगता है, तुम यहाँ बहुत देर से खड़े हो।"
2. आज हमारा देश जैसा है, सदा वैसा ही नहीं रहा।
3. क्या आप मेरा सिर भी स्वीकार करेंगे?
4. कठिन परिश्रम करो; परीक्षा निकट है।
5. शाम को बादल तो घिरे, लेकिन बरसात नहीं हुई।
6. जो लोग उसकी प्रशंसा करते हैं; उन्हें वह मूर्ख कहता है।
7. अशोक के अनुसार, 'शिखरों से आगे' मेरी श्रेष्ठ रचना है।
8. नेता जी ने कहा, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।"
9. मोहन ने तुरंत जवाब दिया "हमें यहाँ लाने में जेलर ने भारी भूल की।"
10. "उसकी परीक्षा लूँगा", यह सुनकर विष्णु हँसे और कहा, "ले सकते हो।"
11. मोहन ने पूछा–"क्यों रमा, तुम दूध पी चुकी।"
12. आज हर व्यक्ति चाहता है–सुख, यश, संपत्ति व सम्मान।

मुहावरे

अभ्यास-कार्यपत्रिका–47

1. मुहावरे वे वाक्यांश हैं, जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं। जैसे–

मुहावरा	**अर्थ**	**वाक्य प्रयोग**
अंग अंग खिल जाना	(बहुत खुश होना)	पुत्र के डॉक्टर बन जाने पर माता-पिता के अंग अंग खिल गए।
आग बबूला होना	(बहुत क्रोधित होना)	रवि छोटी-छोटी बात पर आग बबूला हो जाता है।

2. 1. मुहावरों का प्रयोग वाक्यांश के रूप में होता हैं, स्वतंत्र वाक्य के रूप मे नहीं।
2. मुहावरे का मूल रूप नहीं बदलता।
3. मुहावरा सांकेतिक या लाक्षणिक अर्थ देता है अर्थात् मुहावरा सामान्य अर्थ न देकर, अर्थ विशेष में रूढ़ हो जाता है।

3. 1. कड़ी धूप पड़ना 2. इनकार करना 3. सबसे अलग रहना
4. आत्मनिर्भर होना 5. होश आना 6. बदल जाना
7. प्रार्थना करना 8. क्रोध को भड़काना 9. पूर्ण रूप से नष्ट करना
10. व्यर्थ की बातें करना

4. 1. आकाश-पाताल एक कर दिया 2. हाथ पर हाथ धरकर बैठने 3. सिर पर कफ़न बाँधे
4. हवाई किला बनाने से 5. हाथ नहीं फैलाता 6. उँगलियों पर नचा रही है
7. ईद का चाँद हो गया 8. चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं 9. घाट-घाट का पानी पी रखा है
10. चादर देखकर पैर पसारता है

5. 1. बहुत प्रिय – राम-लक्ष्मण दोनों ही महाराज दशरथ के गले के हार थे।
2. लज्जित होना – सत्येंद्र के पिताजी ने उसे जुआ खेलते देखा, तो उन पर घड़ों पानी पड़ गया।
3. धोखा देना – छत्रपति शिवाजी पहरेदारों को चकमा देकर जेल से भाग गए थे।
4. शोभा बढ़ाना – वह तो पहले से ही धनी और सम्मानित है, न्यायाधीश बन जाने से तो उसकी प्रतिष्ठा में चार चाँद ही लग गए।
5. देखने में सामान्य परंतु गुणी – यह लेखक तो छुपा रुस्तम निकला। देखते-ही-देखते कई उपन्यास लिख डाले।
6. बड़ी मुसीबत में पड़ना – विमान दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से यात्रियों की जान के लाले पड़ गए।
7. सामान्य बात को बढ़ा-चढ़ाकर बताना – अरे! तुमने तो ज़रा-सी बात को लेकर तिल का ताड़ बना दिया।
8. प्राणों की चिंता न करना – वीर पुरुष सदैव सिर पर कफ़न बाँधकर ही घर से निकलते हैं।

अशुद्धि शोधन

अभ्यास-कार्यपत्रिका–48

1. 1. हानि 2. क्षमा 3. नीरस 4. प्रसाद 5. पूर्व
6. पत्नी 7. झूठ 8. चढ़ना 9. देश 10. विज्ञान
11. पुण्य 12. स्कूल 13. रानी 14. दूँगा 15. कवि
16. शासन 17. ऋतु 18. भूख 19. जिह्वा 20. प्रसन्न

2. 1. (क) सर्वज्ञ 2. (ख) स्फूर्ति 3. (क) क्रोध 4. (ख) मूर्ति 5. (ख) लक्ष्मी
6. (ख) आश्चर्य 7. (क) क्षत्रिय 8. (क) उत्पत्ति 9. (क) अंताक्षरी 10. (क) धनुष

खंड-ग

(भाषा प्रयोग: रचनात्मक अभिव्यक्ति)

नोट : सामान्य परिचय एवं संकेत-बिंदुओं के आधार पर खंड 'ग' की सभी अभ्यास-कार्यपत्रिकाओं के उत्तर बच्चे स्वयं करें एवं अपने अध्यापक/अध्यापिका से मूल्यांकन कराएँ। पत्र-लेखन का अभ्यास करते समय औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्रों के प्रारूप का ध्यान रखें।

अभ्यास प्रश्न-पत्र

अभ्यास प्रश्न-पत्र–1

1. 1. क्रिसमस का त्योहार 25 दिसंबर को मनाया जाता है।
2. क्रिसमस को मनाने का मुख्य प्राकृतिक कारण है कि सर्दियों के छोटे दिन क्रमशः कुछ बड़े होने लगते हैं।
3. क्रिसमस के त्योहार का संबंध ईसाई धर्म (मत) से है।
4. क्रिसमस का त्योहार हमें घृणा, ईर्ष्या, द्वेष और पाप से दूर रहकर प्रेम व एकता के साथ मिल-जुलकर रहने का संदेश देता है।
5. 'मत' शब्द का अर्थ है राय या वोट।

2. 1. इस काव्यांश का शीर्षक है 'कोयल'।

2. कोयल की बोली मीठी होती है।

3. कोयल कूक-कूककर आमों में मिसरी घोलती हैं।

4. कोयल को मीठा बोलना माँ ने सिखाया।

5. कोयल चिड़ियों की रानी कहलाती है।

खंड-'ख'

3. छात्र स्वयं करें।

4. छात्र स्वयं करें।

खंड-'ग'

5. 1. भाषा की आरंभिक अवस्था को बोली कहते हैं।

2. जिन वर्णों के उच्चारण में अधिक वायु तथा अधिक समय लगे, उन्हें महाप्राण कहते हैं।

3. शब्द के वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है।

4. वार्षिक + उत्सव = वार्षिकोत्सव, सु + आगत = स्वागत।

5. सु-उपसर्ग 6. इक-प्रत्यय

7. वर्णों का सार्थक समूह शब्द है और वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद है।

8. दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बनने वाले सार्थक शब्द यौगिक कहलाते हैं।

9. विकारी शब्दों के चार भेद होते हैं। 10. कर्ण–कान, लक्ष–लाख 11. कौआ–काक

12. कमल–नीरज, आँख–नेत्र 13. सरस–नीरस, उचित–अनुचित 14. अंबर–वस्त्र/आकाश

15. दुर्गम 16. जो बहुत बोलता हो 17. पीतांबर–कर्मधारय

18. लड़कियाँ सेब खा रही हैं। 19. अपादान कारक

20. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 21. संज्ञा और सर्वनाम पदों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

22. सुलाती 23. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं–1. सकर्मक 2. अकर्मक।

24. के कारण 25. ताकि

26. शब्दों के सार्थक, क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित ढंग से प्रयुक्त समूह को वाक्य कहते हैं; जैसे– रमेश पुस्तक पढ़ता है।

27. (ग) संदेहवाचक 28. सूरज–उद्देश्य; पूर्व में निकलता है–विधेय 29. मिश्र वाक्य

30. कान पर जूँ नहीं रेंगती

अभ्यास-प्रश्न-पत्र–2

1. 1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है। – दिशाहीन युवा शक्ति।

2. किसी भी देश की युवा शक्ति के भटकने पर वह देश अवनति के गर्त में गिर जाता है।

3. भारत के लिए दुर्भाग्य की बात यह है कि यहाँ की अधिकांश युवाशक्ति दिशाहीन है।

4. युवा वर्ग लूट-खसोट, चोरी, डाकेजनी, बलात्कार, हत्याकांड आदि अपराधों में सम्मिलित पाया जाता है।

5. शिक्षा को रोजगार से जोड़कर और पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा अनिवार्य कर युवाओं की दिशाहीनता को कम किया जा सकता है।

2. 1. हवा स्वभाव से बावली और मस्तमौला है।

2. हवा शहर, गाँव, बस्ती, नदी, रेत, जंगल, हरे खेतों व तालाब के आस-पास घूमती है।

3. हवा एक मुसाफ़िर की तरह है। वह निडर है। उसे किसी चीज़ की चिंता नहीं। उसका जहाँ मन करता है, वहाँ घूमती है। वह मस्तमौला है।

4. प्रस्तुत पद्यांश में बसंती हवा का वर्णन किया गया है।

5. **निर्जन**–जंगल, सुनसान क्षेत्र, **पोखर**–तालाब

खंड-'ख'

3. छात्र स्वयं करें।

4. छात्र स्वयं करें।

खंड-'ग'

5. 1. भाषा 2. ब्राह्मी 3. वर्ण-विच्छेद 4. मूल स्वर 5. तत्सम

6. रूढ़ 7. संख्या, चिह्न 8. पुरस्कार 9. रचना-मोक्ष 10. आध्यात्मिक

11. बपौती 12. चीता, मच्छर 13. पर, से 14. स्वयं

15. 1. निश्चित परिमाणवाचक विशेषण 2. अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण।

16. 1. सकर्मक क्रिया 2. अकर्मक क्रिया 17. वर्तमान काल 18. रीतिवाचक 19. संबंधबोधक

20. सद्भावना, संवाद 21. इच्छावाचक 22. उपसर्ग 23. अतिरिक्त, अत्याचार, अत्यंत

24. पन, इक 25. नीला है जो कंठ (कर्मधारय समास), नीला है कंठ जिसका (शिव) (बहुव्रीहि समास)

26. अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, ''बाबा, मैं दुखिया हूँ।''

27. आसान कार्य, परीक्षा में अच्छे अंक लाना गुड़िया का खेल नहीं है।

28. अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं। 29. रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं।

30. 1. बच्चों को आम काटकर खिलाओ। 2. हत्या करने वाले को मृत्युदंड मिलना चाहिए।